

# डॉ. मार्क जेनिंग्स, मार्क, व्याख्यान 14, मार्क 8:14-9:1, खमीर, अंधा आदमी, पतरस का कबूलनामा

© 2024 मार्क जेनिंग्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. मार्क जेनिंग्स द्वारा मार्क के सुसमाचार पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 14 है, मार्क 8:14-9:1, खमीर, अंधा आदमी, पतरस का इकबालिया बयान।

मार्क के अध्याय 8 में फिर से आगे बढ़ते हुए, और आज इस अंतिम खंड में हम पहले पहलू के अंत तक पहुँचेंगे, मार्क के सुसमाचार का पहला प्रमुख तत्व, जो यीशु के अधिकार को प्रस्तुत करना है, और दूसरे पहलू पर जाना शुरू करेंगे, जो यह है कि यीशु यरूशलेम से गुज़र रहे हैं, यीशु की मृत्यु।

याद रखें कि मनुष्य के पुत्र की पीड़ा का यह व्यापक विषय क्या है और कैसे ये दो शब्द लगभग विरोधाभासी लगते हैं। इसलिए, हमने पद 11-13 से बात करना छोड़ दिया, जिसमें फरीसियों और उनके द्वारा चिन्ह के लिए किए गए अनुरोध के बारे में बात की गई थी और यह कैसे अवज्ञाकारी इस्राएलियों, विश्वास की कमी, समझ की कमी और यहां तक कि उनके खिलाफ़ निर्णय की घोषणा से जुड़ा था कि उन्हें कोई चिन्ह नहीं मिलेगा। लेकिन फिर हम इस सवाल पर वापस आते हैं कि शिष्यों को क्यों याद नहीं है, क्यों नहीं समझ में आया, या क्यों नहीं उम्मीद थी कि यीशु चमत्कार करेंगे और 4,000 लोगों को भोजन कराएँगे।

इस प्रश्न का उत्तर मार्क के सुसमाचार के अगले भाग में मिलना शुरू होता है, जो श्लोक 14 से शुरू होकर 21 तक चलता है। शायद हम इसे 13 से भी शुरू करेंगे।

फिर वह उन्हें छोड़कर नाव में वापस चला गया और दूसरी तरफ़ चला गया। इसलिए वे नाव में थे। शिष्य रोटी लाना भूल गए थे, सिवाय उस एक रोटी के जो उनके पास नाव में थी।

यीशु ने उन्हें चेतावनी दी, सावधान रहो। फरीसियों और हेरोदेस के खमीर से सावधान रहो। उन्होंने आपस में इस पर चर्चा की और कहा, " यह इसलिए है क्योंकि हमारे पास रोटी नहीं है।"

उनकी चर्चा से अवगत होकर, यीशु ने उनसे पूछा, तुम रोटी न होने की बात क्यों कर रहे हो? क्या तुम अभी भी नहीं देखते और समझते हो? क्या तुम्हारे हृदय कठोर हो गए हैं? क्या तुम्हारे पास आँखें हैं, परन्तु तुम नहीं देख सकते और कान हैं, परन्तु तुम नहीं सुन सकते? और क्या तुम याद नहीं करते? जब मैंने पाँच हज़ार के लिए पाँच रोटियाँ तोड़ी, तो तुमने टुकड़ों की कितनी टोकरियाँ उठाईं? उन्होंने उत्तर दिया, बारह। और जब मैंने चार हज़ार के लिए सात रोटियाँ तोड़ी, तो तुमने टुकड़ों की कितनी टोकरियाँ उठाईं? उन्होंने उत्तर दिया, सात। उसने उनसे कहा, क्या तुम अभी भी नहीं समझते? यह यीशु और शिष्यों के बीच बातचीत का एक दिलचस्प हिस्सा है।

एक, मुझे लगता है कि यह वास्तव में थोड़ा हास्यपूर्ण ढंग से शुरू होता है। शिष्य इस नाव में हैं और शिष्यों के बारे में हमें सबसे पहले यही बताया जाता है कि वे क्या करना भूल गए हैं। यहाँ भूलने और याद रखने और याद रखने के मजबूत सबूत हैं।

बेशक, याद रखना थोड़ा अलग तरीके से काम करने वाला है। शिष्य नाव में अपने साथ रखी रोटी के अलावा रोटी लाना भूल गए थे। तो, तस्वीर यह है कि शिष्य इस बारे में बात कर रहे हैं कि उनके पास पर्याप्त रोटी नहीं है।

वे भूल गए हैं, और फिर यीशु ने, दृश्य कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि यीशु यह बातचीत सुनते हैं और कहते हैं, सावधान रहो। फरीसियों और हेरोदेस के खमीर से सावधान रहो।

और वे एक दूसरे से, शिष्यों से इस पर चर्चा करते हैं। और इसलिए मेरे मन में यह तस्वीर है कि वे रोटी के बारे में बात कर रहे हैं। यीशु अचानक बीच में आकर कहते हैं, फरीसियों और हेरोदेस के खमीर से सावधान रहो।

और फिर शिष्य एक दूसरे की ओर देखते हुए लगभग यह सोच रहे थे कि, यह टिप्पणी कहाँ से आई? और वे कहते हैं, यह इसलिए होगा क्योंकि हम रोटी के बारे में बात कर रहे हैं। क्योंकि हमारे पास रोटी नहीं है। और इस चर्चा से अवगत होकर, यीशु कहते हैं, तुम रोटी न होने की बात क्यों कर रहे हो? दूसरे शब्दों में, वह कहते हैं, मेरी टिप्पणी का इस तथ्य से कोई लेना-देना नहीं है कि तुम्हारे पास रोटी नहीं है।

यह मेरी टिप्पणी नहीं है। क्या आप नहीं देखते या समझते? क्या आपके दिल कठोर हो गए हैं? अब, देखने या समझने का यह संदर्भ, दिलों का कठोर होना, और फिर अगले दो सवाल: क्या आपके पास आँखें हैं लेकिन आप देख नहीं पाते? कान हैं लेकिन सुन नहीं पाते? मेरा मतलब है, इससे वे अंश सामने आते हैं जिनके बारे में हम पहले ही यीशु को बात करते हुए देख चुके हैं। यिर्मयाह 5:21, यहजकेल 12:2। बेशक, वैचारिक रूप से यशायाह 6.9 से बहुत मिलता-जुलता है। जो मरकुस 4:11-12 में यीशु ने जो कहा उससे मेल खाता है। और इसलिए, यहाँ शिष्य रोटी की कमी के बारे में चिंतित हैं।

और यह चिंता, फिर से, एक नाव पर है, जिसे हमने यहाँ नावों पर कई बार उनकी अज्ञानता को घटित होते देखा है। यीशु उन पर जो आरोप लगा रहे हैं, वह यह है कि वे मानवीय दृष्टि से चीज़ों के बारे में ज़्यादा सचेत हैं, बजाय इसके कि वे उस पल के महत्व को देखें और जो कुछ हो रहा है, उसके साथ वे कौन हैं और यीशु द्वारा उनके लिए प्रदान की जाने वाली उदार आपूर्ति को देखें। इसलिए, वे रोटी की कमी पर बहस और चर्चा कर रहे हैं।

यह तथ्य कि वे रोटी की कमी पर बहस और चर्चा कर रहे हैं, यह दर्शाता है कि वे यीशु द्वारा किए जा रहे कार्यों के महत्व को नहीं समझते हैं। वे इस संबंध में मसीह के अनुयायी की तुलना में फरीसियों के अधिक करीब हैं। वे कठोर होने के करीब हैं, अगर आप कहें, तो ऐसी मानसिकता रखने के लिए जो फरीसियों और हेरोदेस के अनुरूप है।

यहाँ हेरोदेस के संदर्भ पर ध्यान दें। फिर से, फरीसी और हेरोदेस यीशु को मारने की इच्छा में एकजुट हो गए थे। मानवीय परंपराओं और शक्ति और उनके काम करने के तरीके पर उनके जोर ने उन्हें यीशु को मारने के लिए प्रेरित किया था।

और यीशु उनका न्याय कर रहा था और व्यक्त कर रहा था कि वे कितने गलत सोच वाले थे। साथ ही, यह मत भूलिए कि हेरोदेस ने जॉन बैपटिस्ट को मरवा दिया था। क्योंकि वह भी कुछ ऐसा घोषित कर रहा था जो उसे उसकी मानवीय शपथ और जिसे वह सच मानता था, के बीच में उलझा रहा था।

लेकिन फिर भी उसने अपनी मानवीय शपथ को पूरा करने और अपने साथियों का सम्मान बनाए रखने का फैसला किया। इसलिए, यहाँ हम इस नाव पर हो रही इस फटकार को देख सकते हैं कि वे समझ नहीं पा रहे हैं कि यीशु की उपस्थिति में होने का क्या मतलब है। उसी तरह जैसे कि वे समझ नहीं पाए और यीशु ने उन्हें नाव पर तूफान के साथ घबराने के लिए डांटा।

मैं सोच रहा था कि उस समय उनकी जिंदगी बर्बाद हो सकती है या वे मारे जा सकते हैं। मुझे लगता है कि यह भी कुछ ऐसा ही विचार है। और, बेशक, खमीर की तस्वीर भी दिलचस्प है क्योंकि खमीर एक छोटा सा टुकड़ा है जो पूरी रोटी को संक्रमित और प्रभावित कर सकता है।

खमीर रहित करने के संदर्भ में अलग रखना या फिर निर्गमन के मूल भाव में इसका क्या अर्थ हो सकता है। लेकिन सिर्फ रूपक, खमीर क्या करता है, इसका चित्र, मुझे लगता है, यहाँ पर ध्यान में रखा गया है। और जब हमारे पास यह है, तो इसके साथ, यह याद रखने का आह्वान है।

और मुझे नहीं लगता कि हमें इसे अनदेखा कर देना चाहिए। स्मरण करने का यह आह्वान, यह एक बाइबिल पहलू है। पुराने नियम में याद रखने पर ज़ोर दिया गया है।

याद रखें। वाचा जो स्थापित की गई है। इस्राएलियों को हमेशा याद रखना है कि यहोवा ने उन्हें मिस्र से बाहर निकालते समय क्या किया था।

इसलिए, मुझे लगता है कि याद रखने के इस आह्वान में उस विचार को ध्यान में रखा गया है। यीशु सिर्फ यह नहीं कह रहे हैं, अरे, क्या तुम भूल गए कि कुछ हफ़्ते पहले क्या हुआ था? वे उस तरह से याद नहीं कर रहे हैं जिस तरह से परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर द्वारा किए गए महान कार्यों को याद रखना चाहिए। और याद रखने का यह कार्य, इस बाइबिल के चित्र में, याद रखने के आह्वान के साथ भविष्य में भरोसा करने का आह्वान भी जुड़ा हुआ है।

आप इस बात पर भरोसा करते हैं कि परमेश्वर क्या कर रहा है और क्या करेगा क्योंकि आपको याद है कि उसने क्या किया है। और आपको उसका चरित्र याद है। और इसलिए, मुझे लगता है कि यहाँ भी एक अंतर्निहित फटकार है।

और फिर वह यह भी कहता है, आप जानते हैं, पाँच हज़ार के लिए पाँच रोटियाँ और टोकरियाँ भरकर बच जाती हैं। चार के लिए सात रोटियाँ और टोकरियाँ भरकर बच जाती हैं। और फिर, 21

के साथ, वह यह कहकर समाप्त करता है, क्या आप नहीं समझते? और मुझे लगता है कि हम यहाँ जिस बात के लिए मंच तैयार कर रहे हैं, वह यह है कि वे नहीं समझते।

वे नहीं समझते। उन्हें कुछ समझ है, लेकिन अभी भी पूरी समझ नहीं है। जो कुछ हो रहा है, उसके बारे में उनकी धारणा, अगर आप एक पूर्ण समझ और धार्मिक नेताओं की कठोरता और अस्वीकृति के साथ एक रेखा खींचते हैं, तो वे अभी जो कुछ इकट्ठा करते हैं, उसके संदर्भ में वे उस लक्ष्य के करीब हैं, न कि पूर्ण समझ में।

वे वहाँ नहीं हैं, लेकिन वे उस तरफ थोड़ा झुके हुए हैं। और इसलिए, जब हम यह सवाल पूछते हैं, तो वे इसे कैसे नहीं समझ सकते थे और वे, आप जानते हैं, यह क्यों नहीं मान रहे थे कि यीशु चार हज़ार लोगों को खाना खिलाएगा। मुझे लगता है कि मार्क हमें यहाँ एक जवाब दे रहे हैं।

फरीसियों ने एक चिन्ह की मांग की क्योंकि उन्होंने यीशु को और उसके द्वारा कहे जा रहे व्यक्ति को अस्वीकार कर दिया था। शिष्य भी ठीक से नहीं समझ पाए कि यीशु कौन है, इसलिए वे इन भोजन की अपेक्षा नहीं कर रहे थे।

वे ऐसा होने की उम्मीद नहीं कर रहे हैं क्योंकि वे यह नहीं बता पा रहे हैं कि वे किसके साथ हैं। बेशक, यह और भी अधिक स्पष्ट होने वाला है। हमने अपनी चर्चा की शुरुआत में ही इस बारे में बात की थी कि कैसे शिष्य मार्क के सुसमाचार में बहुत नकारात्मक प्रकाश प्रस्तुत कर रहे हैं।

हम इसे जारी देख रहे हैं। तो, यह फिर एक तस्वीर, एक चमत्कार स्थापित करता है जो यीशु द्वारा शिष्यों से कही गई बातों की अभिव्यक्ति की तस्वीर के रूप में कार्य करता है। और यह अंधे आदमी के उपचार में है।

तो, हम इस बात पर चर्चा कर रहे हैं कि कैसे ये भोजन कराया गया, फरीसी इसे अस्वीकार कर रहे हैं, शिष्य इसे ठीक से समझ नहीं पा रहे हैं। और फिर हम अध्याय 8 की आयत 22 पर पहुँचते हैं। वे बेथसैदा आए, और कुछ लोग एक अंधे आदमी को लेकर आए और यीशु से उसे छूने की विनती की। ध्यान दें कि यह बिल्कुल वैसा ही है जैसा हमने चमत्कार की कहानियों को प्रस्तुत होते देखा है।

यीशु एक क्षेत्र में प्रवेश करते हैं, कुछ लोग इसके बारे में सुनते हैं, वे चमत्कार के लिए किसी को लाते हैं। उन्होंने अंधे आदमी का हाथ पकड़ा और उसे गाँव के बाहर ले गए। संयोग से, यह बहरे और गूंगे आदमी के उपचार से बहुत अलग नहीं है जहाँ वे उसे एक तरफ ले गए।

लेकिन मुझे लगता है कि यहाँ जो महत्वपूर्ण है वह हमेशा दर्शकों के संदर्भ में सोचना है। यहाँ, मार्क हमें यह बताने में बहुत सावधान है कि दर्शक यहाँ का पूरा शहर नहीं है, बल्कि इसे बाहर लाया गया है। जब उसने उस आदमी की आँखों पर थूका और उस पर हाथ रखा, तो यीशु ने पूछा, क्या तुम कुछ देख रहे हो? उसने ऊपर देखा और कहा, मैं लोगों को देख रहा हूँ।

वे पेड़ों की तरह दिखते हैं जो इधर-उधर घूम रहे हैं। एक बार फिर, यीशु ने उस आदमी की आँखों पर हाथ रखा, फिर उसकी आँखें खुल गईं, उसकी दृष्टि वापस आ गई, और उसने सब कुछ साफ़-साफ़ देखा। यीशु ने उसे घर भेज दिया, और कहा, गाँव में भी मत जाना।

यह एक दिलचस्प विवरण है। अब हमारे पास थूक का दूसरा प्रयोग है, जो दिलचस्प है। यह किसी अंग को छूने से भी जुड़ा है, जैसे कि यहाँ आँखों से।

लेकिन इससे भी ज़्यादा चौंकाने वाली बात यह है कि चमत्कार पहली बार में पूरी तरह से काम नहीं करता है। मार्क के पाठक के रूप में, आप इस बात से बहुत हैरान होंगे। इसलिए, वह इस शहर में प्रवेश कर चुका है।

एक अंधा आदमी था। वह अंधे आदमी को एक तरफ ले जाता है और उसकी आँखों पर हाथ रखता है। उस पर थूका गया।

लोगों ने सुझाव दिया कि शायद यीशु वहाँ जो कर रहे थे, वह आँखों पर जमी गंदगी को रगड़ने की कोशिश कर रहे थे। तो, वह कुछ-कुछ वैसा ही कर रहे हैं जैसा मेरी माँ बचपन में करती थी, जो कि बस उसे खुरचना और खुरचना है। मुझे लगता है कि यहाँ ऐसा कुछ भी नहीं है जो यीशु के काम जैसा लगे।

मार्क हमें यह नहीं बताता कि यीशु क्या कर रहा है। हमारे पास अभी भी वही तस्वीर है, जैसे यीशु के थूक का इस्तेमाल बहरे और गूंगे लोगों को ठीक करने में किया गया था। अब, यह अंधेपन के साथ है।

तो, आपके मन में फिर से यह विचार आ सकता है कि यीशु चाहते हैं कि आप प्रतीकात्मक रूप से उनके भीतर कुछ ऐसा दिखाएँ जिसका चमत्कारी प्रभाव हो। लेकिन अगर हम मार्क का अनुसरण कर रहे हैं, और हम यीशु को बस कुछ करते, दूर से कुछ बोलते, हाथ रखते, थामते और तुरंत बहाल होते देखने के आदी हैं। हर चीज़ में हमेशा तुरंत बहाली होती रही है।

पहले चमत्कार से लेकर, जिसमें पतरस की सास को बुखार था और अब वह पूरी तरह से सेवा करने में सक्षम थी। उस व्यक्ति तक जो लकवाग्रस्त था, जिसके पैर इतने मजबूत थे कि वह अपनी चटाई उठाकर चल सकता था। सभी तरह से लोग सुनने और बोलने में सक्षम हो गए।

जो लोग भूत-प्रेत से ग्रसित थे, वे तुरन्त अपने होश में आ गए। सीरोफिनीशियन महिला जिसकी बेटी पूरी तरह से स्वस्थ हो गई। यहाँ तक कि यार्डर की बेटी, जो मर चुकी थी, अब जीवित हो गई।

ऐसा कभी नहीं हुआ कि, ओह, मुझे इसे फिर से आजमाना चाहिए। ऐसा लगता है कि यह काम नहीं करता। तो फिर अगर हम यह मान लें कि यीशु में तुरंत और पूरी तरह से चंगा करने की क्षमता है, और हम इसे यीशु के उद्देश्यपूर्ण तरीके से चमत्कार करने के तरीके के साथ जोड़ते हैं, इस विचार के साथ कि जिस तरह से चमत्कार होता है वह संदेश का उतना ही हिस्सा है जितना कि चमत्कार खुद, हम उन्हें एक साथ जोड़ते हैं, तो मुझे लगता है कि तार्किक निष्कर्ष यह है कि यीशु ने उद्देश्यपूर्ण तरीके से दो-चरणीय चमत्कार में यह किया।

गलती से या असमर्थता से नहीं, बल्कि अक्षमता से। तो, हमारे लिए इसका क्या मतलब है? फिर मार्क हमें इस चमत्कार को कैसे समझाना चाहता है? खैर, हम यहाँ यीशु से आगे बढ़ रहे हैं, जो केवल यह संकेत दे रहा है कि शिष्य अभी भी वास्तव में नहीं समझ पाए हैं कि वह कौन है। और भले ही जब से उसने उन्हें इस घटना के लिए बुलाया है, तब से एक समय बीत चुका है, फिर भी वे अभी भी नहीं समझ पाए हैं कि वह कौन है।

हम पतरस के कबूलनामे पर जाने के लिए तैयार हो रहे हैं, जहाँ पतरस यीशु के बारे में कुछ ऐसी बात की पुष्टि करता है जो सही है, और फिर तुरंत ही यह सबूत बन जाता है कि उसने जो कबूल किया है उसे वह पूरी तरह से नहीं समझता है। फिर इस अंधे आदमी के ठीक होने का लगभग एक परवलयिक कार्य है। यह एक तस्वीर बनाता है, और मुझे लगता है कि भीड़ इसे नहीं देखती, लेकिन शिष्य इसे देखते हैं।

मार्क ने स्पष्ट किया है कि इस व्यक्ति को बाहर लाया गया है। इस अंधे व्यक्ति का चंगा होना किसी ऐसे व्यक्ति को दर्शाता है जो पहले देख नहीं सकता था, फिर उसने कुछ हद तक देखा, लेकिन वास्तव में पूरी तरह से नहीं, और फिर पूरी तरह से देखा। यह शिष्यों के साथ क्या हो रहा है, इसका एक चित्र बन जाता है।

वे नहीं देख सकते थे, उन्हें यीशु ने बुलाया था, फिर से, यीशु यहाँ जानबूझकर कार्य कर रहे हैं, उन्हें यीशु ने बुलाया है, और यीशु द्वारा बुलाए जाने की प्रक्रिया में, और यीशु के आस-पास होने और यीशु की शिक्षाओं को सुनने के दौरान, जहाँ यीशु रहस्यों को खोल रहे हैं, वे देखना शुरू कर रहे हैं, लेकिन स्पष्ट रूप से नहीं। लेकिन आशा है। यह चमत्कार आशा प्रस्तुत करता है कि वे अंततः स्पष्ट रूप से देखेंगे।

कि एक समय ऐसा आएगा जब वे सिर्फ पेड़ों की तरह दिखने वाले लोगों को नहीं देखेंगे। और मैं मार्क के पाठक के लिए भी सोचता हूँ; मार्क कह रहा है, मैं समझता हूँ कि अगर आप इसे स्पष्ट रूप से नहीं देख पा रहे हैं, लेकिन यह समझने के लिए कि यीशु कौन है, वह आएगा, एक स्पष्टता है जो आएगी, जैसे-जैसे कथा आगे बढ़ती है। और इसलिए, मुझे लगता है कि इस चमत्कार का चुनाव, और इस चमत्कार का स्थान, विशेष रूप से इस चमत्कार के होने पर जोर देना जब यह कथा में होता है, मार्क के पाठक के लिए बहुत उपयोगी है, क्योंकि यह बताता है कि इस बिंदु पर शिष्यों में वास्तव में क्या हो रहा है।

और अब हम मार्क के सुसमाचार के पहले मुख्य भाग के पहले भाग के अंत में पहुँच गए हैं। हम कफरनहूम में पहले दिन से लेकर अंधे आदमी के चंगाई तक यीशु के अधिकार के बारे में बात करते रहे हैं, जहाँ यीशु का अधिकार स्पष्ट रूप से प्रमाणित हुआ है, क्योंकि वह अधिक शक्तिशाली और चमत्कारी है। और अब हम मार्क के सुसमाचार में एक बड़े बदलाव, एक मोड़ पर पहुँच रहे हैं, जहाँ अब यीशु की शक्ति प्रदर्शित नहीं हो रही है, बल्कि यीशु की पीड़ा प्रदर्शित हो रही है।

हम यरूशलेम की ओर इस कदम के तनाव की ओर मुड़ रहे हैं। यह मोड़ यहाँ पतरस के स्वीकारोक्ति के साथ होता है, जो सुसमाचार के पहले भाग से दूसरे भाग में इस परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण क्षण है।

और हम देखेंगे कि इस स्वीकारोक्ति के बाद भविष्यवाणियों, पीड़ाओं, पीड़ा में क्या होने वाला है, शिष्यों के गलत होने की भविष्यवाणियों का चक्र चलता है, लेकिन शिष्यों को सिखाया भी जाता है। अब ध्यान भीड़ के बजाय शिष्यों पर केंद्रित है, ध्यान शिष्यों पर केंद्रित होने जा रहा है। जब हम इस स्वीकारोक्ति को देखते हैं तो यह दिलचस्प है, अगर आप चाहें तो बहुत सारी चिंताएँ या तर्क हैं कि पीटर का स्वीकारोक्ति और घटनाएँ और इसके इर्द-गिर्द की शिक्षाएँ सच होने के लिए बहुत सही हैं, सच होने के लिए बहुत अच्छी हैं।

उन्हें प्रारंभिक चर्च की रचना होना चाहिए, क्योंकि वे केवल अत्यंत शैक्षणिक प्रतीत होते हैं। और इसलिए, पीटर के स्वीकारोक्ति में भारी ईसाई धर्म संबंधी जोर के कारण, और फिर पीड़ा और जुनून की भविष्यवाणियों से इसके संबंध के कारण, कुछ सवाल उठे हैं, कि शायद यह प्रारंभिक चर्च या यहां तक कि मार्क का भी इसमें समावेश था। समस्या यह है कि इस घटना की ऐतिहासिकता के लिए बहुत सारे सबूत हैं।

उदाहरण के लिए, यह स्थल कैसरिया फिलिप्पी के बाहर है। यह क्षेत्र के अन्य शहरों की तुलना में कोई बड़ा शहर नहीं है। इसका उल्लेख महान सुसमाचार कहानी में कहीं और नहीं मिलता।

इसका पुराने नियम की कहानी से कोई बहुत बड़ा विषयगत संबंध नहीं है। इसमें पीटर का नकारात्मक चित्रण है। कोई सोच सकता है कि अगर यह शुरुआती चर्च का काम होता, तो पीटर को इतने नकारात्मक रूप में पेश नहीं किया जाता।

ईश्वर के पुत्र की उपाधि का अभाव है, जो कि आरंभिक चर्च की पसंदीदा उपाधियों में से एक थी। आपके पास मनुष्य के पुत्र की भाषा का उपयोग है, जो, जैसा कि हम जानते हैं, आरंभिक चर्च में जल्दी ही अप्रचलित हो जाती है। इसके माध्यम से काम करने वाली घटनाएँ, बहुत सारे एंकर हैं जिन्हें ऐतिहासिकता के लिए चुनौती के संदर्भ में आसानी से समझाया नहीं जा सकता है।

वास्तव में, यहाँ बहुत सी ऐसी बातें हैं जो ऐतिहासिकता को दर्शाती हैं। पीटर की फटकार और पीटर की तुलना शैतान से करना शायद ही ऐसा कुछ हो जिसे चर्च ने बनाया होता और अगर यह वास्तव में नहीं हुआ होता तो इसमें शामिल किया जाता। यहाँ तक कि मसीहा और पुनरुत्थान को जोड़ने का यह विचार भी।

जिन बातों पर बहस की जाती है, उनमें से एक, जिसके बारे में हम मार्क 8.31 में एक सेकंड में और बात करेंगे, वह यह है कि यीशु पुनरुत्थान पर जोर देते हैं। ऐसा कोई संकेत नहीं है कि यह उम्मीद की गई थी कि मसीहा को पुनरुत्थान का एक अनूठा अनुभव होगा। अगर यह चर्च का निर्माण पुल बनाने के लिए था, पुनरुत्थान को इस बात का सबूत बनाने के लिए कि यीशु मसीहा हैं, तो यह बहुत ही अजीब तरीका लगता है क्योंकि यह उम्मीद नहीं की गई थी कि मसीहा भी पुनर्जीवित होंगे।

और इसलिए, यह सबूत, यहां तक कि संबंध का, मसीहाई विचार और पुनरुत्थान विचार, मुझे लगता है, थोड़ा तनावपूर्ण लगता है अगर यह केवल सम्मिलन है और घटित नहीं हुआ। हम एक सेकंड में उस कथन के बारे में थोड़ा और बात करेंगे, लेकिन आइए 8:27 से शुरू होने वाले अंश को देखें। यीशु और उसके शिष्य कैसरिया फिलिप्पी के आस-पास के गाँवों में गए। रास्ते में उसने उनसे पूछा, लोग मुझे कौन कहते हैं? अब मैं बस एक सेकंड के लिए यहीं रुकना चाहता हूँ क्योंकि हम इस पर काम करते हैं।

मार्क के सुसमाचार में हमें बहुत से सवाल मिले हैं। लेकिन ये सवाल लोगों की ओर से इस बारे में पूछे गए हैं कि यीशु कौन है। वह कौन है जो तूफानों को शांत कर सकता है? वह कौन है जो राक्षसों से बात करता है और वे उसकी आज्ञा मानते हैं? हाल ही में, वह कौन है जो बहरे को सुनने और गूंगे को बोलने में सक्षम बना सकता है? हमें सवाल मिलते रहे हैं, लेकिन यहाँ पहली बार हमें यीशु से उसकी अपनी पहचान के बारे में सवाल मिला है, कि लोग उसे कौन कहते हैं।

तो, पहला सवाल यह है कि भीड़ मुझे कौन कह रही है? उन्होंने जवाब दिया, कुछ लोग कहते हैं कि जॉन द बैपटिस्ट, दूसरे कहते हैं कि एलियाह, और फिर भी कुछ लोग, भविष्यद्वक्ताओं में से एक। यह क्रम बहुत हद तक वैसा ही है जैसा हमने मार्क 16, आयत 14 से 16 में देखा था, हेरोदेस के साथ सवाल और जॉन द बैपटिस्ट कौन था, इस बात की याद में। वे सोच रहे थे, अच्छा, यीशु का यह रूप कौन है जिसके बारे में हेरोदेस सुन रहा है? कुछ लोग कहते हैं, अच्छा, यह जॉन द बैपटिस्ट या एलियाह है, और यह जॉन द बैपटिस्ट की शहादत की कहानी का परिचय देता है।

तो, यह क्रम बहुत दिलचस्प है। और फिर, यह जॉन बैपटिस्ट या एलियाह कैसे हो सकता है? हम जिन चीज़ों पर चर्चा कर रहे हैं, उनमें से एक यह है कि लोग यह नहीं सोच रहे हैं कि यीशु वास्तव में जॉन बैपटिस्ट है, लेकिन फिर भी जॉन बैपटिस्ट की भूमिका या भावना अब यीशु द्वारा निभाई जा रही है। मुझे लगता है कि इसे समझाने का यह सबसे अच्छा तरीका है, या यह एक बहुत ही बेतुका विचार बन जाता है जो लोग कह रहे होंगे।

अन्य लोग एलियाह कहते हैं, और यहाँ, निश्चित रूप से, आपके पास यह प्रगति है। यह एक युगांतिक विश्वास है कि एलियाह उस मसीहाई युग की शुरुआत करने में मदद करने के लिए वापस आएगा। और इसलिए, आपके पास यह भावना है कि क्या कुछ लोग कह रहे हैं कि यीशु वह एलियाह व्यक्ति है जिसका वादा किया गया था और जिसकी अपेक्षा की गई थी? और इसलिए, आपके पास यहाँ एक प्रगति है।

बेशक, आप मार्क के पाठक के रूप में, और मैं भी मार्क के पाठक के रूप में, हम जानते हैं कि वह जॉन द बैपटिस्ट के काम को नहीं अपना रहा है क्योंकि जॉन द बैपटिस्ट ने वास्तव में कहा है, यह मुझसे ज़्यादा शक्तिशाली है, मैं इसके लायक नहीं हूँ। और दिलचस्प बात यह है कि हम रूपांतरण के लिए तैयार हो रहे हैं, जहाँ हम फिर से जानेंगे कि यीशु एलियाह नहीं है क्योंकि वे आकृतियाँ अलग-अलग होने जा रही हैं। वास्तव में, एलियाह की आकृति, जैसा कि हमने बात की, जॉन द बैपटिस्ट से ज़्यादा जुड़ी हुई है।

तो यहाँ भी एक ओवरलैप है। और फिर भी अन्य, भविष्यद्वक्ताओं में से एक। अब, निश्चित रूप से यह सोचने का एक कारण है कि यीशु एक भविष्यद्वक्ता है।

वह कानून के अर्थ के बारे में बोलने और निर्णय की घोषणा करने के मामले में भविष्यद्वक्ताओं के समान ही कार्य कर रहा है, ऐसी चीजें जो भविष्यद्वक्ता के विचार के अनुरूप होतीं। और अगर आप इसके बारे में सोचें, तो एक विचार था कि भविष्यद्वक्ता, मूसा जैसा भविष्यद्वक्ता, घटित होगा और आएगा। यह उस प्रत्याशा का संकेत भी हो सकता है।

लेकिन फिर भी, इन उत्तरों को अधूरा माना जाता है, चाहे वह जॉन द बैपटिस्ट के काम से जुड़ा हो, एलिय्याह के युगांत संबंधी पूर्वानुमान लगाने वाले व्यक्ति से, या भविष्यद्वक्ताओं में से किसी एक से या भविष्यद्वक्ताओं में से किसी एक की तरह। क्योंकि श्लोक 29 में, यीशु वापस आता है, आपके बारे में क्या? और यहाँ, ग्रीक में भाषा बहुत जोरदार है। यहाँ आप पर जोर दिया गया है।

तुम मुझे कौन कहते हो? और यही इस समय का मुख्य प्रश्न है क्योंकि हमने अभी-अभी यीशु को शिष्यों से कहते सुना है, क्या तुम नहीं समझते? हम इस पर काम कर रहे हैं और शिष्यों ने हमें दृष्टान्तों की व्याख्या की है। शिष्यों ने समझ की तलाश की है। हमने उन्हें बहुत सी घटनाओं के साक्षी बनते हुए देखा है।

तो अब हम यह जानना चाहते हैं कि क्या वे समझते हैं? और इसका उत्तर सबसे पहले, बहुत सकारात्मक है। पतरस ने उत्तर दिया, आप मसीहा हैं। अब, जब हम पतरस के बारे में कही जा रही बातों पर विचार करते हैं, तो हमें याद रखना चाहिए कि मरकुस ने पतरस को शिष्यों के नेता और शिष्यों के प्रवक्ता के रूप में प्रस्तुत करने में बहुत स्पष्टता दिखाई है।

याद कीजिए जब मार्क ने शिष्यों की सूची बनाई थी, तो उस सूची में भी पतरस को प्रमुखता दी गई थी। इसलिए, जब पतरस उत्तर देता है, आप मसीहा हैं, तो हमें समझना चाहिए कि बाकी 11 लोग भी उस कथन से सहमत हैं। यीशु ने उन्हें चेतावनी दी थी कि वे उनके बारे में किसी को न बताएं।

यह दिलचस्प है कि हम यहाँ मैथ्यू की तरह पूरी तरह से बातचीत नहीं करते हैं और इस बारे में चर्चा करते हैं कि यह कैसे एक उपहार है, यह स्वीकारोक्ति ईश्वर की ओर से रहस्योद्घाटन का उपहार था और फिर पीटर के अधिकार के साथ मिलकर ताला खोलने और चाबी और इस तरह की अन्य चीजें करने का अधिकार दिया गया। हम बस इतना ही समझते हैं: आप मसीहा हैं, और यीशु ने उन्हें चेतावनी दी थी कि वे उसके बारे में किसी को न बताएं। अब, उन्हें न बताने की यह चेतावनी, मुझे लगता है, स्पष्ट रूप से सुझाव देती है कि यीशु उस स्वीकारोक्ति को स्वीकार करता है।

क्योंकि वह जो कह रहा है वह सही नहीं है, आप गलत हैं। इसलिए, मेरा मानना है कि वहाँ पतरस के शब्दों की पुष्टि है। क्योंकि यीशु उन्हें सही नहीं करता, वह कहता है कि किसी को मत बताना, जो हम हमेशा से देखते आए हैं।

आम तौर पर, हम जो देख रहे हैं वह यह है कि महान प्रदर्शनों में भी, यीशु अपनी मसीहाई पहचान को शक्ति के महान प्रदर्शनों या किसी सामाजिक या राजनीतिक उत्साह के साथ जोड़ना चाहते हैं जो विकसित हो सकता है। और इसलिए, मुझे लगता है कि हमारे पास जो है वह यह है कि स्वीकारोक्ति गलत नहीं है, लेकिन जैसा कि हम देखने जा रहे हैं, वे अपने स्वीकारोक्ति को सही ढंग से नहीं समझते हैं। यही कारण है कि मुझे लगता है कि अंधे आदमी के दो-चरणीय उपचार का चमत्कार अब जो हो रहा है उसके बारे में बहुत जानकारीपूर्ण है।

और यहाँ तक कि, अंत में, उसने उन्हें चेतावनी दी कि वे उसके बारे में किसी को न बताएँ, इसके विपरीत उसने पतरस को चेतावनी दी कि वह किसी को न बताएँ, मुझे लगता है कि यह इस बात से जुड़ता है कि पतरस ने जब यह स्वीकारोक्ति दी तो वह उनके लिए बोल रहा था। फिर उसने उन्हें सिखाना शुरू किया कि मनुष्य के पुत्र को बहुत सी पीड़ाएँ झेलनी होंगी और उसे पुरनियों, मुख्य याजकों और व्यवस्था के शिक्षकों द्वारा अस्वीकार किया जाना चाहिए, उसे मार दिया जाना चाहिए, और तीन दिन बाद, तीन दिन फिर से जी उठना चाहिए। अब, मुझे लगता है कि 31 को समझने का सबसे अच्छा तरीका उसकी शिक्षा के अगले चरण के बारे में एक सारांश कथन के रूप में है, जिसके बारे में मुझे लगता है कि यह तुरंत होता है, लेकिन यह भी सामने आता है।

और मुझे लगता है कि पद 31 में वह वाक्यांश, जहाँ उसने फिर उन्हें पढ़ाना शुरू किया, यह दर्शाता है कि अब उसकी शिक्षा के केंद्र में बदलाव आया है। उसकी शिक्षा के केंद्र की शुरुआत में, परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है, पश्चाताप करो और विश्वास करो, और वह इस बात का सबूत दे रहा है कि परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है। अब वह अपनी शिक्षा को इस आवश्यकता पर स्थानांतरित करता है कि मनुष्य के पुत्र को कष्ट सहना होगा और पुरनियों, मुख्य याजकों और व्यवस्था के शिक्षकों द्वारा अस्वीकार कर दिया जाएगा, कि उसे मार दिया जाना चाहिए, और तीन दिनों के बाद फिर से जी उठना चाहिए।

और बेशक, अब यह आंदोलन, हम कथा के संदर्भ में पहले से कहीं ज़्यादा मजबूती से क्रूस की ओर बढ़ रहे हैं। जुनून और भी ज़्यादा स्पष्ट होने जा रहा है। हम सुसमाचार के एक नए चरण में हैं।

यहाँ भी ध्यान दें, जैसे ही बदलाव यरूशलेम में होने वाली घटनाओं की ओर मुड़ता है, जो होने वाली है उसकी पूर्वनिर्धारित गुणवत्ता। यीशु शिक्षा देते हैं, उनकी शिक्षा का विषय यह है कि उनकी मृत्यु एक पूर्वनिर्धारित घटना है। यीशु सिखा रहे हैं कि यह आवश्यक है।

ध्यान दें कि ऐसा नहीं है कि ऐसा होगा। वह केवल मनुष्य के पुत्र के बारे में नहीं कह रहा है। और याद रखें, मनुष्य के पुत्र की छवि उस दानियेल 7 की कल्पना से ली गई है जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं, जहाँ यीशु ने मसीहा के कबूलनामे को लिया है और अब उस मसीहा के कबूलनामे को मनुष्य के पुत्र के रूप में अपनी पहचान के साथ मिला दिया है।

और इसलिए, वह इसे ले रहा है, और अब मसीहा के उस कॉर्पोरेट प्रतिनिधित्व के साथ इस सर्वनाशकारी, युगांतकारी व्यक्ति के कॉर्पोरेट प्रतिनिधित्व के साथ, जो कि डैनियल 7 से मनुष्य के पुत्र की तरह है, वह इन दो विशाल, शासक, प्रतिनिधि आकृतियों को ले रहा है, एक डेविडिक

वंश के संदर्भ में, दूसरा सर्वनाशकारी छवि के संदर्भ में, और वह उन्हें एक साथ ला रहा है और फिर कह रहा है, यह आवश्यक है, मनुष्य के पुत्र को कई चीजें सहनी होंगी। और मुझे लगता है कि यह केवल यह कहने से एक महत्वपूर्ण अंतर है कि यह इस तरह से होने वाला है। अंतिम खेल यह है कि मैं इसके बारे में बात करना जारी रखूंगा, और वे इसके लिए मुझे मारना चाहेंगे।

इसका अपरिहार्य परिणाम यह होगा कि वे इसके लिए मुझे मारना चाहेंगे। यह अलग बात है। यीशु यह नहीं कह रहे हैं कि अपरिहार्य परिणाम यह होगा कि नेता मुझे, यानी मुख्य याजकों को मारना चाहेंगे।

वह जो कह रहा है वह यह है कि यह आवश्यक है कि वह उन्हें सिखाना शुरू करे, न कि यह कि मनुष्य का पुत्र बस मर जाएगा, बल्कि यह कि मनुष्य के पुत्र को पीड़ा सहनी होगी, उसे अस्वीकार किया जाना चाहिए, उसे मरना चाहिए, और तीन दिनों में फिर से जी उठेगा। यह पीड़ा का भाव तब आता है, जरूरी नहीं कि शिष्य इसे समझें, लेकिन यशायाह के पीड़ित सेवक भाव में। तो, आपके पास तीन आकृतियाँ हैं, मुझे लगता है, जिन्हें लाया जा रहा है, दो स्पष्ट रूप से और एक निहित रूप से जो मुझे लगता है कि और भी अधिक स्पष्ट हो जाता है, वह है मसीहा, मनुष्य का पुत्र, और पीड़ित सेवक।

और यह लगभग अकल्पनीय विचार है कि मनुष्य का पुत्र किसी तरह से पीड़ित सेवक भी है जिसे अस्वीकार कर दिया गया है। और हमें यहाँ यह प्रगति मिलती है, और हमें पीड़ा की यह प्रगति मिलती है, कि उसे अस्वीकार कर दिया जाएगा, कि बड़ों से पीड़ा होगी, बड़ों से, मुख्य पुजारियों से, और व्यवस्था के शिक्षकों, शास्त्रियों से अस्वीकार किया जाएगा। और इसलिए प्रत्येक समूह उसे अस्वीकार कर देगा, और उसे मार दिया जाना चाहिए।

और मुझे लगता है कि यहाँ क्रूस पर चढ़ाए जाने के बजाय मारे जाने के बारे में कहना दिलचस्प है। मुझे लगता है कि मैं इस बात की ओर इसलिए इशारा कर रहा हूँ क्योंकि अगर यह शुरुआती चर्च का उत्पाद था, तो विद्वानों ने कहा है कि शायद उन्होंने सिर्फ महत्व के कारण मारे जाने के बजाय क्रूस पर चढ़ाए जाने की भाषा का इस्तेमाल किया होगा। आप पॉल के बारे में सोचें, हम क्रूस पर चढ़ाए गए व्यक्ति में मसीह की घोषणा करते हैं, जो मृत्यु तक, यहाँ तक कि क्रूस की मृत्यु तक आज्ञाकारी है।

संभवतः यहाँ क्रूस पर चढ़ाए जाने की भाषा का इस्तेमाल किया गया होगा। और यहाँ तक कि पुनरुत्थान, तीन दिनों के बाद, फिर से जी उठता है, बजाय इसके कि हम आम तौर पर बाद के चर्च, शुरुआती चर्च में देखते हैं लेकिन बाद के समय के दस्तावेजों में तीसरे दिन, या तीसरे दिन के समय का विचार है, बजाय तीन दिनों के बाद के। यह सिर्फ एक आम वाक्यांश था।

अब समय के काम करने के तरीके की कल्पना की जाती है, आप उस पर प्राचीन दुनिया में दिनों की गिनती थोड़े अलग तरीके से कर सकते हैं। लेकिन आम तौर पर वाक्यांश, जिस कारण से मैं तीन दिनों के बाद के वाक्यांश की ओर इशारा कर रहा हूँ, आमतौर पर हम जो शुरुआती चर्च दस्तावेजों में देखते हैं, उसके अनुरूप नहीं है। इसलिए, हम इसे प्राप्त करते हैं, जैसा कि हम इस पर काम करते हैं, यह श्लोक 32 में कहा गया है, उन्होंने इसके बारे में स्पष्ट रूप से बात की।

अब यह महत्वपूर्ण भाषा है, क्योंकि हम पहले से ही इस बारे में बात कर रहे हैं कि यीशु भीड़ से कैसे बात करेंगे और शिष्यों से कैसे बात करेंगे। और हम दृष्टान्तों के बारे में बात कर रहे थे। दृष्टान्तों में, उन्होंने दृष्टान्तों में भीड़ से बात की, लेकिन उन्होंने शिष्यों से स्पष्ट रूप से बात की और इसे समझाया।

और इसलिए यहाँ, ध्यान दें कि विचार यह है कि यीशु इसे पहेलियों में नहीं छिपा रहे हैं। वह इसकी आवश्यकता की ओर संकेत नहीं कर रहे हैं। वह इसके बारे में स्पष्ट रूप से बोल रहे हैं।

और इसलिए सवाल यह है कि वे क्यों नहीं समझते। खैर, मार्क ने पहले ही हमें बता दिया है कि वे क्यों नहीं समझ रहे हैं। दृष्टान्त की वह तस्वीर, चमत्कार की तस्वीर, वहाँ दिखाई देती है, लेकिन अभी तक नहीं। मुझे लगता है कि विचार यह है कि यह पूरी तरह से प्रकट नहीं हुआ है।

मुझे लगता है कि मार्क जिस बात की ओर इशारा कर रहे हैं, वह यह है कि यीशु कौन हैं, इसकी सही समझ अभी भी संभव नहीं है। अब, इसके साथ, मुझे याद रखने के लिए यह संकेत पसंद है। मुझे लगता है कि याद रखने का यह आह्वान कि उसने शिष्यों को निर्देश दिया है कि यहाँ यीशु जो कुछ भी कह रहे हैं, उसे याद रखा जाए और यह सुसमाचार की घोषणा का एक हिस्सा होगा, खासकर अगर मार्क पीटर से इसका बहुत कुछ सीख रहा है।

सबूतों में से एक यह तथ्य है कि हमें इसमें पीटर की उच्च भाषा नहीं मिलती है। पीटर के अधिकार और उपहार के संदर्भ में उसकी उन्नति और पीटर की प्रथम प्रकृति को म्यूट किया गया है, इसका कारण यह है कि पीटर ने शायद, मेरा अनुमान है, हम निश्चित रूप से नहीं जानते हैं, कि जब पीटर ने इस घटना के बारे में सोचा तो उसने इसे भी म्यूट कर दिया। यह पीटर की इस घटना की याद को दर्शाता है।

तो, फिर हम आगे बढ़ते हैं, और वह इस बारे में स्पष्ट रूप से सिखा रहा है, श्लोक 32, और पतरस उसे एक तरफ ले गया और उसे डांटना शुरू कर दिया। इस तस्वीर के बारे में सोचें। उसने अभी-अभी यीशु को मसीहा के रूप में पुष्टि की है, और फिर भी, शिक्षा का नया रूप पतरस की मानवीय समझ के अनुरूप नहीं है कि मसीहा कौन है।

पतरस यीशु को एक तरफ ले जाता है और उसे शर्मिंदा करता है, उसे डांटता है, और उसे सुधारने का प्रयास करता है। कि किसी तरह यीशु कह सकता है कि तुम मसीहा हो, फिर भी उसे लगता है कि उसे यीशु की बातों के लिए उसे डांटना चाहिए। यह दर्शाता है कि यीशु के मसीहा होने के बारे में पतरस की समझ यीशु की समझ से मेल नहीं खाती कि मसीहा होने का क्या मतलब है।

यह मानवीय समझ के अधिक अनुरूप है, यह समझ फरीसियों की अपेक्षा के अधिक करीब है कि मसीहा कैसा होगा या धार्मिक नेताओं की अपेक्षा के अनुसार मसीहा कैसा होगा। और हमारे पास फटकार लगाने का दुस्साहस है। यीशु फरीसियों और धार्मिक नेताओं को न समझने के लिए फटकारते रहे हैं।

यहाँ, पतरस कथित तौर पर यीशु को न समझने के लिए डाँट रहा है। फिर, आयत 33 में, यीशु मुड़ता है और अपने शिष्यों की ओर देखता है, और वह पतरस को डाँटता है। अब, यह मुड़ना और शिष्यों की ओर देखना मार्क का तरीका है जिससे हम यह सुनिश्चित कर सकें कि पतरस को मिलने वाली डाँट शिष्यों तक पहुँच गई है।

और यीशु को डाँटने में पतरस की हरकतें भी शिष्यों की समझ की अभिव्यक्ति हैं। हमें यहाँ शिष्यों और पतरस के बीच कोई अंतर नहीं करना चाहिए, चाहे पतरस शिष्यों की आवाज़ का प्रतिनिधित्व कर रहा हो।

और वह पतरस से कहता है, शैतान, मेरे पीछे हट जा। तेरे मन में परमेश्वर की चिंताएँ नहीं हैं, बल्कि सिर्फ़ मानवीय चिंताएँ हैं। सबसे पहले, यह भाषा शैतान, मेरे पीछे हट जा की है।

आप जानते हैं, यह एक भारी बयान है, और आप परमेश्वर की योजना में जो आवश्यक है उसके रास्ते में खड़े होने की कोशिश कर रहे हैं। और शैतान, मेरे पीछे हट जा, इससे ज़्यादा कड़ी फटकार के बारे में सोचना मुश्किल है। जब हम स्पष्ट रूप से भूत-प्रेत और राक्षसों को शैतान के शासन, शैतान की शक्ति के साथ जोड़ते रहे हैं।

और यीशु उनके खिलाफ़ काम कर रहा है। और अब वह पतरस को लगभग शैतानी गतिविधि से जोड़ रहा है। लेकिन इससे भी ज़्यादा, आपके मन में परमेश्वर की चिंताएँ नहीं हैं, बल्कि सिर्फ़ मानवीय चिंताएँ हैं।

यह लगभग वही कथन है जो यीशु ने फरीसियों और धार्मिक नेताओं के खिलाफ़ दिया था जब उन्होंने उनके समर्थन, मानवीय आदेशों, मौखिक परंपराओं को बढ़ावा देना और परमेश्वर के आदेशों को अस्वीकार करने के बारे में बात की थी। वह फरीसियों और धार्मिक नेताओं पर उसी शब्दावली में परमेश्वर के आदेशों की तुलना में मानवीय परंपराओं के बारे में अधिक चिंतित होने का आरोप लगाता है। यह वही फटकार है जो वह पतरस और उन शिष्यों को देता है जिनका वह सामना कर रहा है।

आपकी समझ उन धार्मिक नेताओं जैसी है जो मेरा विरोध कर रहे हैं। जो कॉर्बिन के अपने संस्करण को बढ़ावा देना चाहते हैं, जो सब्बाथ के बारे में अपनी समझ रखना चाहते हैं, जो सब्बाथ के इरादे और इच्छा और अर्थ के खिलाफ़ है। जो मुझे मारने की साजिश कर रहे हैं।

यही बात मार्क ने जोर देकर कही है, कि हम समझते हैं कि फरीसी और धार्मिक नेता यीशु को मारने की कोशिश कर रहे हैं। जो लोग यीशु को मारने की साजिश कर रहे हैं, वे यीशु को बेहतर तरीके से समझते हैं। इसलिए, पतरस को यीशु के बारे में ज़्यादा जानकारी है।

और यह फटकार, जैसा कि आप मार्क के सुसमाचार के माध्यम से काम कर रहे हैं, एक तीखी फटकार है। और यह हमें याद दिलाता है, और यह हमें एहसास कराता है, कि इस बिंदु पर शिष्य यीशु का अनुसरण करने के लिए आदर्श नहीं हैं। वे शिष्यत्व का आदर्श नहीं हैं।

वे विपक्ष के ज़्यादा करीब हैं। और यह सवाल उठता है कि आखिर ऐसा क्या है जो शिष्यों को भीड़ से अलग करता है? क्योंकि ऐसा लगता है कि वे धार्मिक नेताओं के शिष्य हैं। ऐसा लगता है कि वे बहुत कुछ एक जैसे और एक जैसे ही कर रहे हैं। और फिर, जैसा कि हम हमेशा अनुसरण करते हैं, हम देखेंगे कि यीशु शिष्यों की जगह लेना जारी रखता है।

पहल हमेशा यीशु के पास होती है, यीशु उन्हें यहाँ ले जाता है, वहाँ ले जाता है। यीशु उन्हें कभी दूर नहीं भेजता या उनसे दूर नहीं जाता।

तो इस कहानी में इस बिंदु पर, यह क्या है कि शिष्य भीड़ या फरीसियों से अलग हैं, यह शिष्यों के चरित्र या उनकी समझ के बारे में नहीं है, बल्कि ऐसा लगता है कि यह यीशु के चुनाव और जानबूझकर किए गए काम में है। तो, यहाँ अध्याय 8 को समाप्त करते हुए। यीशु ने इस बारे में स्पष्ट रूप से बात की और फटकार लगाई। फिर उसने अपने शिष्यों के साथ भीड़ को अपने पास बुलाया और कहा, जो कोई मेरा शिष्य बनना चाहता है, उसे अपने आप से इनकार करना होगा और अपना क्रूस उठाना होगा और मेरे पीछे आना होगा।

क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा, पर जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचाएगा। यदि तुम सारे जगत को प्राप्त करो, और अपनी आत्मा की हानि उठाओ, तो तुम्हें क्या लाभ होगा? या अपनी आत्मा के बदले में तुम क्या दे सकते हो? यदि तुम में से कोई इस व्यभिचारी और पापी पीढ़ी के बीच मेरे और मेरे वचनों से लजाएगा, तो मनुष्य का पुत्र भी जब पवित्र स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा, तो तुम से लजाएगा। और फिर 9 :1, जो मुझे लगता है कि इसके साथ जुड़ा हुआ है।

और उसने उनसे कहा, मैं तुमसे सच कहता हूँ, यहाँ खड़े कुछ लोग तब तक मृत्यु का स्वाद नहीं चखेंगे जब तक वे यह न देख लें कि परमेश्वर का राज्य सामर्थ्य के साथ आ गया है। यहाँ यह कदम तब उठाया गया जब शिष्यत्व को अस्वीकार कर दिया गया और फिर सभी की ओर एक मोड़ आया और यह स्पष्ट रूप से बताया गया कि सच्चा शिष्यत्व कैसा दिखता है। सच्चा शिष्यत्व राजा, गुरु के मार्ग को दर्शाता है।

और यीशु ने अभी कहा है कि उसे कष्ट सहना होगा। इसका मतलब है कि सच्चे शिष्यत्व का मतलब दुख की आवश्यकता को समझना भी है। मसीह का अनुसरण करने का मतलब सांसारिक सम्मान और सांसारिक शक्ति या चीज़ों की सांसारिक समझ हासिल करना नहीं है, बल्कि इसका मतलब है मसीह के लिए, सुसमाचार के लिए यहाँ की हर चीज़ और सभी चिंताओं को अस्वीकार करने की इच्छा।

और इस प्रकार, पूरी दुनिया को हासिल करने या आत्मा को खोने का क्या मतलब है? यीशु महान उलटफेर दिखा रहे हैं। वह बता रहे हैं कि मसीहा और मनुष्य के पुत्र होने का क्या मतलब है, इसकी समझ में बदलाव का मतलब यह भी है कि अनुसरण करने का क्या मतलब है, इसकी समझ में भी बदलाव आता है। और मुझे लगता है कि यहाँ क्रॉस की भाषा जरूरी नहीं है, फिर से, तर्क यह होगा, ठीक है, क्योंकि वह क्रॉस का उल्लेख करता है, यह चर्च का बाद का सम्मिलन होना चाहिए।

इतना ही नहीं, इसके लिए इसकी आवश्यकता है। क्योंकि क्रूस स्वयं शर्म का एक बड़ा प्रतीक होता और रोम की राजनीतिक शक्ति का भी एक बड़ा प्रतीक होता। और इसलिए इस कथन में, यीशु कहते हैं, मसीहा के रूप में मेरा अनुसरण करने का अर्थ रोम को उखाड़ फेंकना और सीज़र और उसके सभी साथियों को हटाना नहीं है।

इसका मतलब है कि वास्तव में सीज़र के अधीन रहने के लिए तैयार रहना। और इसका मतलब है कि सीज़र द्वारा दी जाने वाली सबसे बड़ी शर्म को सहने के लिए भी तैयार रहना। और इसलिए, मुझे लगता है कि क्रॉस भाषा के लिए प्रारंभिक चर्च के सम्मिलन की आवश्यकता नहीं है, बल्कि प्रारंभिक चर्च द्वारा बाद में सम्मिलन की आवश्यकता है, बल्कि वास्तव में पीड़ा और मसीहाई ओवरटोन के प्रतीकवाद के भीतर भी अच्छी तरह से फिट बैठता है।

और फिर आपके पास श्लोक 38 है, यदि आप में से कोई भी मेरे शब्दों में, इस व्यभिचारी और पापी पीढ़ी में मुझसे शर्मिंदा है, और आप व्यभिचारी और पापी पीढ़ी को नहीं सुन सकते हैं और इस्राएलियों की जंगल की पीढ़ी के बारे में नहीं सोच सकते हैं, उन लोगों के बारे में नहीं सोच सकते हैं जो परमेश्वर द्वारा प्रदान किए गए उद्धार और वाचा संबंध की स्थापना के बारे में बड़बड़ा रहे थे और बड़बड़ा रहे थे, कि यीशु यहाँ कह रहे हैं, जो कोई भी मुझसे शर्मिंदा है, जो कोई भी वही करता है जो पतरस ने अभी किया, जो मुझे यह कहने के लिए फटकारना है कि मुझे अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए, मार दिया जाना चाहिए, अस्वीकार किया जाना चाहिए, मारा जाना चाहिए, जो कोई भी इससे शर्मिंदा है वह व्यभिचारी और पापी पीढ़ी का सदस्य है। वह इस पीढ़ी का सदस्य है जिसने मुझे अस्वीकार कर दिया है, जिस पर मैंने पहले ही निर्णय घोषित कर दिया है, जो कि जंगल में परमेश्वर की इस्राएलियों की अस्वीकृति की निरंतरता है, वह पापी पीढ़ी। और फिर यह आगे की ओर संकेत करता है, कि यीशु को अस्वीकार करने का अर्थ है कि जब मनुष्य का पुत्र अपने पिता की महिमा में पवित्र स्वर्गदूतों के साथ आएगा, तो वह आपसे लज्जित होगा, और यह सर्वनाशकारी न्याय की भाषा है।

और इसलिए, यीशु दृढ़ता से कह रहे हैं कि यदि आप मुझे अस्वीकार करते हैं, अर्थात्, जिस तरह से मैं आपको बता रहा हूँ कि इसका क्या अर्थ है कि मैं मसीहा और मनुष्य का पुत्र हूँ, यदि आप इसे अस्वीकार करते हैं, तो आप न्याय के समय अस्वीकार कर दिए जाएँगे। यह कठोर भाषा है। और फिर यहाँ समापन करते हुए, श्लोक 9-1, मैं तुमसे सच कहता हूँ, यहाँ खड़े कुछ लोग तब तक मृत्यु का स्वाद नहीं चखेंगे जब तक वे यह न देख लें कि परमेश्वर का राज्य सामर्थ्य के साथ आ गया है।

इस बात पर बहुत बहस हुई है कि उस विशेष श्लोक का क्या अर्थ है। कुछ लोगों ने तर्क दिया है कि यीशु बिलकुल गलत हैं, कि उन्होंने मनुष्य के पुत्र के बादलों में लौटने की आशा की थी, कि वह स्वयं भी मनुष्य के पुत्र के रूप में उस पीढ़ी के मरने से पहले बादलों में लौट रहे थे, और ऐसा नहीं हुआ, इसलिए यीशु गलत थे। दूसरों ने सुझाव दिया है कि यह उस रूपांतरण का उल्लेख कर रहा है जो होने वाला है क्योंकि वह अपनी शक्ति, परमेश्वर के राज्य, महान चित्र में दिखाई देने वाला है, और वास्तव में, रूपांतरण ही वह है जो आगे होता है।

मुझे लगता है कि संदर्भ को देखते हुए, इनमें से कोई भी एक सटीक व्याख्या नहीं है। सबसे पहले, यह मान लेना कि यह दूसरे आगमन का उल्लेख कर रहा है, कि यीशु ने इसे गलत तरीके से प्राप्त किया, वास्तव में परमेश्वर के राज्य के संबंध में इसका क्या अर्थ है, इसे अत्यधिक सीमित करना है। संदर्भ से ऐसा लगता है कि यीशु इस बारे में बात कर रहे हैं कि मसीहा होने का क्या अर्थ है, मनुष्य का पुत्र होने का क्या अर्थ है, पीड़ा, अस्वीकृति, मृत्यु और पुनरुत्थान को संदर्भित करता है।

मुझे लगता है कि यीशु यहाँ जो कह रहे हैं, उस संदर्भ को समझने की आवश्यकता है। और इसलिए मुझे लगता है कि इससे दो तत्व और अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं। एक होगा रूपांतरण, जो अभी भी संभव है।

मुझे लगता है कि पुनरुत्थान की संभावना अधिक है। रूपांतरण के साथ एक समस्या यह है कि यह कहना कि आप में से कुछ लोग इसके होने से पहले मृत्यु का स्वाद नहीं चखेंगे, और फिर छह दिन बाद यह मूल रूप से होता है, यह वास्तव में बहुत बड़ा कथन नहीं है कि यहाँ कुछ लोग होंगे, सभी नहीं, यहाँ कुछ लोग होंगे जो अगले छह दिनों तक जीवित रहेंगे। मुझे लगता है कि यह घोषणा उतनी शानदार नहीं है।

लेकिन मुझे लगता है कि वह जिस बात पर जोर दे रहे हैं वह यह है कि यहाँ खड़े कुछ लोग ऐसे होंगे जो परमेश्वर के राज्य के सामर्थ्य के साथ आने से पहले मृत्यु का स्वाद नहीं चखेंगे, वह यह कह रहे हैं कि परमेश्वर के राज्य का सामर्थ्य के साथ आगमन संभवतः पुनरुत्थान का संदर्भ दे रहा है, कि यह पूरी बात होने वाली है। और मुझे लगता है कि वह इसी संदर्भ का उल्लेख कर रहे हैं। हम अगली बार अध्याय नौ से शुरू करेंगे और हम रूपांतरण को देखना शुरू करेंगे क्योंकि हम अब मार्क के सुसमाचार के दूसरे प्रमुख भाग में आगे बढ़ रहे हैं।

धन्यवाद।

यह डॉ. मार्क जेनिंग्स द्वारा मार्क के सुसमाचार पर दिए गए उपदेश हैं। यह सत्र 14 है, मार्क 8:14-9:1, खमीर, अंधा आदमी, पतरस का इकबालिया बयान।